Yada Yada Hi Dharmasya

यदा यदा हि धर्मस्य
ग्लानीं भवति भरत
अभ्युत्थानम् अधर्मस्य
तदात्मनम् श्रीजाम्यहम

अर्थ: जब भी धार्मिकता में गिरावट और पापाचार में वृद्धि होती है,
हे अर्जुन, उस समय मैं स्वयं को पृथ्वी पर प्रकट होता हूं।

परित्राणाय सौधुनाम
विनशाय च दुष्कृताम
धर्मसंस्था पन्नार्थाय
संभवामि युगे युगे

अर्थ: धर्मियों की रक्षा के लिए, दुष्टों का सफाया करने के लिए,
और इस धरती पर दिखने वाले धर्म के सिद्धांतों को फिर से स्थापित
करने के लिए, युगों-युगों तक।

नैनम चिंदंति शास्त्राणि
नैनम देहाति पावकाः
न चौनम् केलदयंत्यपापो
ना शोषयति मारुताः

अर्थ: हथियार आत्मा को नहीं हिला सकते हैं, न ही इसे जला सकते हैं।
पानी इसे गीला नहीं कर सकता और न ही हवा इसे सुखा सकती है।

अहंकारम बलम दरपम
कामम क्रोधम् च समश्रितः
महामातं परमदेषु
प्रदविष्णो अभ्यसुयाकः

अर्थ: कर्तव्य के लिए लड़ो, एक जैसे सुख और संकट, हानि और लाभ,
जीत और हार का इलाज करो। इस तरह अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करने से
आप कभी पाप नहीं करेंगे।

InstaAstro

सुखदुक्खे समान कृतवा
लभलाभौ जयाजयौ
ततो युधाय युज्यस्व
निवम पापमवाप्स्यसि

अहंकार, शक्ति, अहंकार, इच्छा और क्रोध से अंधा, राक्षसी ने पने शरीर के भीतर और दूसरों के शरीर में मेरी उपस्थिति का दुरुपयोग किया।
आआआ... आआआ ।।

InstaAstro